वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग द्वारा स्वीकृत शब्दावली-निर्माण के सिद्धान्त

हिंदी प्रकोष्ठ
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए । अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं : -

(क) तत्वों और योगिकों के नाम, जैसे- हाइड्रोजन , कार्बन डाइ-ऑक्साइड आदि :

(ख) तौल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, जैसे- डाइन , कैलॉरी, एम्पियर आदि :

(ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं, जैसे- मार्क्सवाद (कार्ल मार्क्स) , ब्रेल (ब्रेल) , बॉयकाट (कैप्टेन बॉयकाट) , गिलोटिन (डॉ. गिलोटिन) , गेरीमैंडर (मि. गेरी), एम्पियर (मि. एम्पियर) ,फ़ारेनहाइट तापक्रम (मि. फ़ारेनहाइट) आदि ,

(घ) वनस्पतिविज्ञान, प्राणिविज्ञान ,भूविज्ञान, आदि की द्विपदी नामावली :

(ड़) स्थिरांक जैसे π , g आदि :

(च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है, जैसे-रेडियो ,पेट्रोल , रेडार ,इलैक्ट्रॉन , प्रोटॉन , न्यूट्रॉन आदि :

(छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक ,चिह्न और सूत्र ,जैसे- साइन, कोसाइन , टेन्जेन्ट , लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए) ।

2. प्रतीक , रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएंगे परंतु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी , विशेषतः साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं । सेन्टीमीटर का प्रतीक जैसे cm. हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परंतु नागरी संक्षिप्त रूप से0मी0 हो सकता है । यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा, परंतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मानक पुस्तकों में केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक , जैसे cm ही प्रयुक्त करना चाहिए।

3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों के अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं जैसे : क,ख, ग, या अ,ब,स परंतु त्रिकोणमितीय संबंधों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए , जैसे-साइन A ,कॉस B आदि ।

4. संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यतः अनुवाद किया जाना चाहिए ।

5. हिंदी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता , अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखना चाहिए । सुधार-विरोधी प्रवृत्तियों से बचना चाहिए ।

6. सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासंभव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही इसका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए जो :
(क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हों , और
(ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों ।

7. ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं जैसे telegraph/telegram के लिए तार ,continent के लिए महाद्वीप , post के लिए डाक आदि , इसी रूप में व्यवहार में लाने चाहिए ।

8. अंग्रेजी , पुर्तगाली , फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं , जैसे-टिकट , सिगनल , पेंशन , पुलिस , ब्यूरो , रेस्तरां , डीलक्स आदि , इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए ।

9. **अंतर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण** : अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े । शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप होना चाहिए और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएं जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों ।

10. **लिंग** : हिंदी में अपनाए गए अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को , अन्यथा कारण न होने पर , पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए ।

11. **संकर शब्द** : पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द ,जैसे guaranteed के लिए "गारंटित", classical के लिए "क्लासिकी ",codifier के लिए "कोडकार" आदि , के रूप

सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्दरूपों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं यथा-सुबोधता , उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए ।

12. **पारिभाषिक शब्दों में संधि और समास** : कठिन संधियों का यथासंभव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए । इससे नई शब्द-रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी । जहाँ तक संस्कृत पर आधारित ' आदिवृद्धि ' का संबंध है ,"व्यावहारिक ","लाक्षणिक " आदि प्रचलित संस्कृत तत्सम शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है परंतु नवनिर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है ।

13. **हलंत :** नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए ।

14. **पंचम वर्ण का प्रयोग :** पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए परंतु lens , patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस , पेटेंट या पेटेण्ट न करके लेन्स ,पेटेन्ट ही करना चाहिए ।

(स्रोत : वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित प्रशासनिक शब्दावली)

IIIIIII